पीएच.डी उपाधि हेतु शोध-प्रबंध

(Synopsis for Ph.D)

“ज्ञानप्रकाश विवेक के कथासाहित्य मे यथार्थबोध एवं समकालीन परिदृश्य”

(Gyanprakash Vivek ke kathasahitya men yatharthbodh evm samakalin paridrusha)

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड.

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,

नांदेड़ के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत पीएचडी (हिंदी) उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबंध की रूपरेखा

⁕शोधकर्ता⁕

चित्रा संभाजी जोंधळे

एम.ए.,सेट,एम.फिल.(हिंदी)

⁕शोध निर्देशक⁕

प्रा.डॉ.रत्नमाला धारबा धूळे

एम.ए.,नेट,पीएचडी(हिंदी)

सहयोगी प्राध्यापक

श्री. योगानंद स्वामी आर्ट्स कॉलेज, बसमत

अनुसंधान केंद्र पीपल्स कॉलेज, नांदेड़.

२०२३

“ज्ञानप्रकाश विवेक के कथासाहित्य मे यथार्थबोध एवं समकालीन परिदृश्य”

- प्रथम अध्याय -

  ज्ञान प्रकाश विवेक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
- द्वितीय अध्याय -

  यथार्थबोध - यथार्थ परिभाषा एवं स्वरूप।
- तृतीय अध्याय -

  ज्ञानप्रकाश विवेक के उपन्यासों में यथार्थबोध एवं समकालीन परिदृश।
- चतुर्थ अध्याय -

  ज्ञानप्रकाश विवेक के कहानियों में यथार्थबोध एवं समकालीन परिदृश।
- पंचम अध्याय -

  ज्ञानप्रकाश विवेक के कथासाहित्य में व्यक्त समस्याएँ।
- षष्टम अध्याय -

  ज्ञानप्रकाश विवेक की भाषा तथा शिल्पविधान।
- सप्तम अध्याय -

  उपसंहार एवं उपलब्धियाँ।
- संदर्भ ग्रंथ सूची -

भूमिका :

हिंदी साहित्य के बारे मे जब हम अध्ययन करते है तब हमे साहित्य की वर्तमान स्थिति का पता चलता है और हमारा हिंदी साहित्य समाज से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। हिंदी साहित्य मे अनेक लेखकों ने अपने लेखनी के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधाओं मे अपने विचारों को समाज के समक्ष रखने का प्रयास किया है। इसी के साथ आज के इस आधुनिक युग मे 'कथासाहित्य' एक सशक्त साहित्य के रूप मे दिखाई देता है। साहित्य मे समय के अनुसार अनेक नये-नये विचार, यथार्थता से जुड़ा मानवीय समाज, वर्तमान स्थिति आदि का दर्शन मिलता है। इसी कारण साहित्य की गद्‌य विधा कि ओर लेखक, पाठक आकर्षित होते नजर आ रहे है। इसी का एक भाग मे खुद को समजाति हूँ मुझे भी हिंदी साहित्य मे रुचि होने के कारण मैं अपने अनुसंधान कार्य मे "कथात्मक साहित्य' को महत्व देते हुए "ज्ञानप्रकाश विवेक" जी के कथात्मक साहित्य पर अनुसंधान कार्य करना चाहती हूँ।

१.१ विषय चयन की प्रक्रिया :

साहित्य के अध्ययन के दौरान मैंने यह जाना की किसी भी कहानी या उपन्यास का केंद्र समाज ही होता है और इसी समाज के यथार्थता को सामने लाने के लिए साहित्य की आवश्यकता होती है। साहित्य मे रचनाएँ होती है और इसी रचनाओं से समाज की वास्तविकता का दर्शन तथा वर्तमान बोध मिलता है। यह मैंने अपने एम.फिल. के अध्ययन के दौरान सीखा है। और मुझे अपने अनुसंधान कार्य के लिए यथार्थ से जुड़े सामाजिक एवं संवेदनशील साहित्य की खोज थी। तब मैंने अपना अनुसंधान जारी रखा और मुझे 'ज्ञानप्रकाश विवेक' जी के साहित्य के बारे मे पता चला तो मैंने उनके बारे मे खोज शुरू की इंटरनेट से उनकी थोड़ी-बहुत

जानकारी मिली थी उसका अध्ययन करने के पश्चात यह जान सकी की उनका साहित्य मानवीय संवेदना से जुड़ा हुआ तथा यथार्थ बोध का ज्ञान देता है। इसी से मुझे विषय चयन की प्रेरणा मिली।

१.२ अनुसंधान की वर्तमान स्थिति :

किसी भी अनुसंधान कार्य को शुरू करने से पूर्व यह जानना आवश्यक हो जाता है की अभी तक किन-किन विषयों पर 'अनुसंधान कार्य' हुआ है। यह एक शोधार्थी के लिए सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु होता है। विषय चयन की प्रक्रिया मे विभिन्न विषयों का अध्ययन करना होता है और यह अध्ययन करते समय मुझे यह महसूस हुआ की अभी तक 'ज्ञानप्रकाश विवेक' तथा उनके साहित्य पर किसी भी प्रकार का हमारे विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। और दूसरी ओर वे एक राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कथाकार, गजलकार एवं चिंतक है और इनके साहित्य में सामाजिक हस्तक्षेपों की आवाज़े, सामाजिक संवेदना, विस्थापन की पीड़ा, स्त्री संघर्ष, संवेदनशील नजरिया, समाज की बदलती सोच, नये जीवन मूल्य, पात्रों की मनोदशा आदि का चित्रण इनके साहित्य में दिखाई देता है और इन सभी दृष्टिकोण को लेकर 'ज्ञानप्रकश विवेक' जी पर शोध कार्य संपन्न नहीं हुआ और वर्तमान में 'यथार्थता तथा समकालीन परिदृश्य' पर अनुसंधान कार्य होना चाहिए इसी सोच से मैंने 'ज्ञानप्रकश विवेक के कथात्मक साहित्य में यथार्थबोध एवं समकालीन परिदृश्य' इस विषय पर अपने अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाकर इस विषय का चयन करना चाहती हूँ।

१.३ अनुसंधान की पद्धतियाँ :

अनुसंधान कार्य करते समय साहित्य तथा अनुसंधान का ज्ञान होना आवश्यक हो जाता है परंतु ज्ञान का क्षेत्र इतना व्यापक है की इसे पूर्ण रूप से

ज्ञात नहीं कर सकते। इसी लिए हमे अध्ययन हेतु उसे कुछ भागों में विभाजित कर ज्ञान का संग्रह करना पड़ता है। ठीक उसी तरह प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की व्यापकता को देखकर इसे पूरा करने के लिए निम्न अनुसंधान पद्धतियों का अध्ययन करना होगा।

१) आलोचनात्मक शोध पद्धति

२) तुलनात्मक शोध पद्धति

३) व्याख्यात्मक शोध पद्धति

४) साक्षात्कार शोध पद्धति

५) मननात्मक शोध पद्धति।

आदि शोध पद्धतियों का अध्ययन करना होगा।

प्रस्तुत शोध कार्य विश्वविद्यालय के निच्छित समय सीमा में रहकर ही पूरा किया जायगा। साथ ही पढ़ने के पश्चात ही इस विषय पर चिंतन किया जाएगा।

अध्याय योजना

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को सात अध्यायों में विभाजित किया है। परंतु अनुसंधान कार्य के दौरान अध्ययों की संख्या में बदलाव हो सकता है।

अध्यायों का विवरण -

- **प्रथम अध्याय - ज्ञान प्रकाश विवेक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :**

  साहित्यिक दृष्टि से देखा जाए तो किसी भी साहित्यकार के साहित्य का आध्ययन करते समय रचनात्मक साहित्य में साहित्यकार की प्रत्यक्ष एवं परोक्ष अभिव्यक्ति होती है तथा साहित्यकार के पारिवारिक संस्कार, उसका परिवेश, उसका निजत्व, उसके सामाजिक जीवन का प्रतिफलन होता है। वास्तव में व्यक्तित्व साहित्यकार का अंतर्गत पक्ष है जो उसके साहित्य का साक्षी होता है। इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अंतर्गत पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, वैवाहिक जीवन, व्यवसाय नौकरी, स्वभावगत विशेषताएँ, साहित्य सृजन की प्रेरणा, वैचारिक पृष्ठभूमि तथा ज्ञानप्रकाश जी के साहित्य के अंतर्गत आठ उपन्यास और नौ कहानिसंग्रहों का अनुशीलन विस्तृत रूप से किया जाएगा।

- **द्वितीय अध्याय** - **यथार्थबोध-यथार्थ का अर्थ**, **परिभाषा एवं स्वरूप :**

  यथार्थवाद एक भौतिकवादी दर्शन है। वस्तु को वास्तविक अथवा यथार्थ मानने के कारण ही इस विचारधारा को वास्तववाद अथवा यथार्थवाद की संज्ञा दी जाती है। यथार्थवाद जगत को मिथ्या कहने वाली भावना का विरोधी स्वर है। यथार्थवादी एक एसी विचारधारा है जो यह मानती है की इंद्रियों के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है वही सत्य होता है। यथार्थवादी यह कहते है की जो कुछ संसार में दिखाई पड़ रहा है वही सत्य है। इस अध्याय

के माध्यम से साहित्य में यथार्थ का महत्व बतलाते हुए यथार्थबोध का अध्ययन किया जाएगा।

- **तृतीय अध्याय - ज्ञान प्रकाश विवेक के उपन्यासों में चित्रित यथार्थबोध एवं समकालीन परिदृश्य:**

इस अध्याय के अंतर्गत 'ज्ञान प्रकाश विवेक' जी के उपन्यासों का गहन अध्ययन कर उनके उपन्यासों में चित्रित उनका यथार्थ दृष्टिकोण तथा सामाजिक पहलुओं को देखते हुए उपन्यासों में यतार्थबोध एवं समकालीन परीदृश्यों का अध्ययन किया जाएगा।

- **चतुर्थ अध्याय - ज्ञान प्रकाश विवेक के कहानियों में चित्रित यथार्थबोध एवं समकालीन परिदृश्य:**

'ज्ञान प्रकाश विवेक' जी एक सामाजिक संवेदना वाले लेखक होने के कारण इनके कहानियों का केंद्र भी 'समाज' है। इनकी कहानियाँ नारी संघर्ष, अकेलापन तथा वास्तविकता का बोध करनेवाली कहानियाँ दिखाई देती है। इनके कुछ कहानियों का अध्ययन इस चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा।

- **पंचम अध्याय - ज्ञानप्रकाश विवेक के कथासाहित्य में व्यक्त समस्याएँ :**

'ज्ञान प्रकाश विवेक' जी के साहित्य का अध्ययन करते समय जो भी समस्याएँ दृष्टिगोचर होगी उन सबका अध्ययन इस पंचम अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा।

- **षष्टम अध्याय - ज्ञान प्रकाश विवेक की भाषा तथा शिल्पविधान :**

'ज्ञान प्रकाश विवेक' जी के उपन्यासों की तथा कहानियों की भाषा तथा शिल्पविधान को परखने का प्रयास किया जाएगा। इस अध्याय में उनके उपन्यास तथा कहानियों में प्रयुक्त भाषा की सार्थकता तथा भाषा का

स्वरूप शब्दभंडार, कहावतें, मुहावरे, जीवन सूक्तियां और भाषा की सरलता आदि पर विचार किया जाएगा और विभिन्न शैलियों में व्यक्त ज्ञानप्रकाश जी के प्रस्तुतीकरण को भी विभिन्न दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया जाएगा। इस षष्टम अध्याय के अंतर्गत ज्ञानप्रकाश विवेक जी की भाषा तथा शिल्पविधान का विवेचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

- **सप्तम अध्याय - उपसंहार एवं उपलब्धियाँ :**

प्रस्तुत अध्याय में शोध प्रबंध के उपलब्ध निष्कर्षों को प्रस्तुत कर समग्र मूल्यांकन किया जाएगा। साथ ही अनुसंधान की उपलब्धियाँ तथा अध्ययन की नई दिशाएँ प्रस्तुत की जाएगी। और अंत में आधार ग्रंथ और संदर्भ ग्रंथ की सूची दी जाएगी।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची** -

कुछ संदर्भ ग्रंथ सूची निम्न प्रकार से दी गई है आगे शोध कार्य करते समय संदर्भ ग्रंथ सूची बढ़ भी सकती है।

लेखक **किताब** **प्रकाशक** **प्रकाशन वर्ष**

१.'ज्ञान प्रकाश विवेक' - अस्तित्व - भारतीय ज्ञानपीठ - २००५

२.'ज्ञान प्रकाश विवेक' - विस्थापित - रुद्रादित्य प्रकाशन प्रयागराज - २००५

Website -

- shodhaganga - हिंदी शोध सूची पीएचडी एवं एम.फिल
- Arun kaharba youtube channel- समकालीन परिदृश एवं हिन्दी कहानी/ ज्ञानप्रकाश विवेक

- Google search - ज्ञान प्रकाश विवेक का साहित्य
- ज्ञानप्रकाश विवेक - विकिपीडिया

शोधकर्ता

चित्रा संभाजी जोंधळे
एम.ए.,सेट,एम.फिल.(हिंदी)

शोध निर्देशक

प्रा. डॉ. रत्नमाला धरबा धूळे
एम.ए.,नेट,पीएचडी(हिंदी)
सहयोगी प्राध्यापक
श्री योगानंद स्वामी आर्ट्स कॉलेज,
बसमत.